ज़िंदगी में रूहानियत लाओ - (जीवन में आध्यत्मिकता लाओ)

सभी जीव जंतुओं की दुहरी ज़िंदगी है. दुनियावी ज़िन्दगी ऊपरी है और रूहानी ज़िन्दगी नीचे दबी हुई है. भौतिक जीवन अस्थाई है और नकली है. असली ज़िंदगी तो रूहानी है जो हमेशा रहने वाली है. दुनिया ने उसे ढक रखा है. जब तक दुनिया का तज़ुर्बा न होगा, यहाँ की वस्तुओं और सुख की नाशवानता का पता नहीं लग जाएगा, तब तक रूहानी ज़िंदगी की तरफ नहीं मुड़ेगा. अँधेरे से उजाले में कैसे आएगा. बुराई छोड़ कर भलाई की तरफ कैसे बढ़ेगा?

हमारी आत्मा जो दयाल देश से निकाली गयी और इस कालदेश यानी इस दुनियां में भेजी गयी उसकी वजह यही थी कि हमारे अन्दर ख्वाहिशात (कामनाएं-वासनाएं) भरी पड़ी थी. इसलिए परमात्मा ने दया करके हमें यहाँ भेजा. जब पैदा हुए और आँख खुली तो सबसे पहले माँ-बाप को देखा, भाई-बहिनों को देखा, फिर दुनिया क़ी और चीज़ों को देखा और उनसे मोह हो गया. आये थे निकलने लेकिन उल्टे उलझने लगे.

दुनिया के सब काम करते-करते जीव सब बातों का कर्ता अपने आप को समझने लगता है लेकिन जब उसे होश आता है और दुनिया की बातों का तज़ुर्बा होता है तब वह देखता है कि जितने काम मैं कर रहा हूँ वह रहने वाले नहीं है. उनसे हासिल ख़ुशी रहती नहीं है, जाती रहती है. शादी ब्याह किया तो ख़ुशी मिली, लेकिन शादी के बाद जब बाल-बच्चेदारी और गृहस्थी क़ी दुःख-मुसीबतें सामने आती हैं तो वह ख़ुशी जाती रहती है. संतान पैदा हुई तो ख़ुशी हुई लेकिन उसके मर जाने या अलहदा हो जाने पर क्या वही ख़ुशी क़ायम रहेगी? रुपया पैदा करते हैं और उसे जोड़-जोड़ कर खुश होते हैं, क्या वह क़ायम रहेगा. अलहदा तो ज़रूर होगा. बड़े-बड़े सेठ-साहूकार एक दिन में दिवालिया हो जाते हैं, बड़े-बड़े राजे-महाराजे खाने के मोहताज़ दिखाई देते हैं. कहाँ गयी वह ख़ुशी?

हम यहाँ आये हैं दुनिया का तज़ुर्बा करने के लिए. इसलिए यह ज़रूरी है कि जितना आवश्यक हो उतना उसमें घुसो यानी ज़रुरत के मुताबिक उसमें व्यवहार करो लेकिन उसे अपना लक्ष्य मत बनाओ. अगर उसी को सब कुछ समझ रखा है तो ईश्वर के दरबार में कैसे घुसोगे? लोग कहते हैं कि तरक़्क़ी नहीं होती. फंसे हुए हैं दुनिया में, एक दो दिन को शौकिया सत्संग में आये तो आ गए, घर पर भी कभी संध्या-पूजा कर ली तो कर ली नहीं तो दुनिया के धंधों में ही लगे रहे. मकान बनवाने क़ी ख़्वाहिश हुई तो उसको बनाने के लिए रुपए के इंतज़ाम की फ़िक्र हुई, क़र्ज़ लिया या और कहीं से इंतज़ाम किया. जब मकान बन कर तैयार हो गया और कर्ज़ा

भी अदा हो गया तो तो यह फ़िक्र हो गयी कि कोई किरायेदार नहीं मिलता. जब किरायेदार मिल गया, माल इकठ्ठा होने लगा तो चोर-डाकू आने लगे, रखवाली की फ़िक्र बढ़ गयी.

क्या ज़िंदगी भर यही करते रहोगे? ईश्वर का ध्यान कब करोगे? किसी को देखो तो वो बेटों की शिकायत करता है कि वे कहना नहीं मानते. यह तो दुनियाँ का कायदा है. बेटा अपना घर देखें या तुम्हारा? इसमें शिकायत काहे की? बहुएं आती हैं अपना घर छोड़कर. बेटा बहू की नहीं सुनेगा तो क्या तुम्हारी सुनेगा? सासें शिकायत करती हैं कि जब से बहू आई है तब से बेटा हमारी बात नहीं सुनता. उनसे कोई पूछे क्या तुमने अपने बेटे को परमेश्वर समझ रखा है कि वही तुम्हारा पालन-पोषण करेगा? क्या तुम उससे पहले भूखे मरते थे या उसके बाद भूखे मरोगे? तुमने अपना फ़र्ज़ पूरा कर दिया. अब यह तुम्हारे बेटे की ज़िम्मेदारी है कि वह अपना फ़र्ज़ पूरी तरह अदा करता है या नहीं. अगर वो अपना फ़र्ज़ अदा नहीं करता तो इसमें दुखी होने की क्या बात है? अगर लड़कों के झंझट में पड़े रहोगे तो ईश्वर की तरफ ध्यान कैसे लगेगा ?

जो चीज़ हमें ईश्वर से दूर करती है, हमें चाहिए कि उसे छोड़ते चलें और जो चीज़ हमें ईश्वर के नज़दीक लाती है, उसे अपनाते चलें. लेकिन हम ऐसा कर नहीं पाते. बात क्या है? अभी अधिकार पैदा नहीं हुआ है. संस्कार तो बना और मनुष्य जन्म भी मिल गया लेकिन अगर अधिकार भी बनता तो गुरु की ओट लेते जिससे मन से पिण्ड छूट जाता. लेकिन जो मन को ही अपना साथी समझते हैं और ईश्वर को नहीं चाहते और मन के कहने पर ही चलते हैं,उन पर मन हर समय हावी रहता है.

आम शिकायत है कि मन नहीं मानता. तुम्हें अपनी तो अपनी,अपने रिश्तेदारों तक की फ़िकर पड़ी है. उनकी उलझनों की भी ज़िम्मेदारी तुमने अपने ऊपर ले रखी है. कहते हैं कि फ़लां (अमुक) ने ये बुराई की और फ़लां इस तरह ख़राब है. तुम क्या इसी काम के लिए यहाँ आये थे और क्या यह काम तुम्हारे ही सुपुर्द है? ईश्वर तमाम दुनिया का मालिक है. तुम अपने आप को मालिक समझते हो. तुम ईश्वर का मुक़ाबला करते हो और हो कुछ नहीं. फिर कहते हो कि मन नहीं लगता.

फंसे तो तुम खुद हो, गुरु तुम्हें कैसे हटाए? जब तुम खुद निकलना चाहोगे, तब गुरु तुम्हारी मदद करेगा. मदद उनके लिए है जो निकलना चाहते हैं और उसके लिए कोशिश करते हैं मगर निकल नहीं पाते. चाहते हो कि तुम्हारे दुनियां के सब काम पूरे होते रहें और तुम्हें दीन भी मिल जाए. यह नहीं हो सकता. एक गुरु नहीं

अगर सारे गुरु भी ज़ोर लगाएं, तो भी जब तक तुम खुद नहीं निकलना चाहोगे तब तक कोई मदद नहीं कर सकता.

सन्त तो दुनियाँ उजाड़ने आते हैं, आग लगाने आते हैं. आग लगाने का मतलब यह है कि दुनियाँ में कर्म करते हुए उसमें फंसो मत, उसे मुख्य मत समझो, मन को और अपने आपको भी दुनियाँ से निकालो.

ख़ुदी (अहं) क्या है? ख़ुदी यह है कि मन चाहता है कि मैं जिसको चाहूँ उसको अपनी मर्ज़ी से चलाऊ. धरम पर चलने के बाद भी कोई-कोई दुखी रहता है. ऐसा क्यों है? ऐसा इसलिए है कि ख़ुदी बीच में है. चाहते हैं कि जैसा मैं कर रहा हूँ वैसा ही सब करें. जब तक दुनिया तुम्हारे सामने है और तुमने उसी को मुख्य समझ रखा है, तब तक ईश्वर तो मिलता नहीं. इसलिए पहले अपनी सहायता आप करो. तुम खुद फंसे हो. मन की ज़ंजीरों में तुम खुद जकड़े हो, अगर तुम उन्हें काटना पसंद करोगे तब गुरु तुम्हारी मदद करेगा. जब तक उसमें फंसे रहोगे उसमें और फंसते जाओगे तो दूसरा यानी गुरु तुम्हारी क्या मदद करेगा?

हम ख़ुदा ख़्वाही व दुनियाँ ए दूँ

ई ख्यालस्तो मुहालस्तो जिनूं

(भावार्थ: चाहते हो कि दुनिया भी मिल जाए और ईश्वर भी मिल जाए . ऐसा ख्याल करना पागलपन नहीं तो और क्या है.)

==========

राम सदेश : दिसंबर १९९३